कावड़िए

शिवजी का जयकारा लगाते।
कंधे पर कावड़ लटकाते।।
श्रद्धा भक्ति की अलख जगाते।
शिव भोले को भक्त रिझाते।।
महिमा सावन की है निराली।
हर और फैली है हरियाली।।
रिमझिम बूंदे तन मन भिगाऐ।
कावड़िया फिर बढ़त बनाऐ।।
भक्ति राह में कई कष्ट आते.....
सब भक्त मिलकर एका करते।
धर्मपथ पर चल यात्रा करते।।
नदी ताल से चले जल भरकर।
चलते जाते सब श्रद्धा धरकर।।
भजन भोले के गाते जाते......
मनहर मोहक कावड़ सजाते।
शिव पर श्रद्धा से जल चढ़ाते।।
एक वर्ष बाद अवसर आया।
शिव चरणों में शीश नमाया।।
जय बोल शिवालय गुंजाते......

मनोहर सिंह चौहान मधुकर

इंतजार

किसी की इंतज़ारी में है शायद,
बेकरार बेकरारी में है शायद।
कोई आँखों में ऐसा बस गया है,
ये दिल उसी खुमारी में है शायद।
किसी मुसाफ़िर से दिल लगा बैठे हैं,
दिल अब सफ़र की तैयारी में है शायद।
वो परेशान है मेरे लिए चारागर सा,
कैसे कहें दिल उनकी बीमारी में है शायद।
वो बहुत आगे निकल गया राह में,
कोई अब भी जाँ-निसारी में है शायद।
माना इश्क़ और मुश्क ज़ाहिर होते हैं,
असल लुत्फ़ तो राज़दारी में है शायद।
मौसम-ए-हिज्र भी टँगा है सूरज की तरह,
ये बरस भी अश्क-बारी में है शायद।
जिया भटक रहा है अब भी आईनों में,
'अक्स' अब भी दुनियादारी में है शायद।

नितिन पुरोहित अक्स उज्जैन

पत्थर

पत्थर का मतलब ये नहीं होता कि
वो चीज वहीं थी सदियों से
पत्थर का मतलब ये नहीं होता कि
कोई चीज अपने-आप यूँ ही बनी होगी
पत्थर का मतलब ये भी नहीं होता कि
सबको बस उसकी ठोकर लगने से बचना है
पत्थर का मतलब कुछ और होता है
कुछ खास, अगर वो रास्ते का पत्थर है
पत्थर का मतलब निकाले तो
क्या ये नहीं हो सकता कि
कोई चीज कहीं छोड़ दी गई हो -
पत्थर बनने के लिए
या फिर कोई चीज किसी के इंतजार में
पड़े-पड़े पत्थर बन गई हो
पत्थर को कुरेदा जाना चाहिए
पूछा जाना चाहिए
पत्थर तभी पत्थर बनता है
जब उसकी कहानी सुनी नहीं जाती..

अवतार सिंह अक्षरजीवी

क्षणिकाएँ

हम आसमान से भी गिर कर नहीं टूटे,
मगर उन्होंने मुंह फेर लिया तो हम चूर-चूर हो गए।
मैंने उनकी राह में कई दीये जला रखे थे
मगर वे ऐसे रूठे कि
ना उन्हें दीये दिखाई दिए और
ना ही में मैं दिखा !
इसे विकास मत कहो।
इसे विनाश ही कहो
क्योंकि इसी विकास ने
हमें अपनों से दूर किया है।
ऊँचे उड़नेवालो, इतना भी न उड़ो कि
नीचे चलने वाले इंसान तुम्हें
कीड़े मकोड़े नजर आएं
और तुम्हें उनको मसलने का मन करे।
मत भूलो, ज़ब तुम्हारे पर कतरे जायेंगे तो
तो इन्हीं इंसानों के हाथ तुम्हें संभालेंगे।

ज्ञानदेव मुकेश, पटना

अक्षर..शब्द...चुप्पी और कविता

एक रोज एक अक्षर ने
धीरे से मुझ से कहा
तुम्हारे हृदय की गहराई में
जो मौनकथा छिपी है
क्या मुझे बताओगे?
मैं मुस्कुराया
क्योंकि अक्षर कभी भी
खुशियों के बागों में नहीं जन्मते
वेदनाओं की मिट्टी में जन्मे पौधे हैं वे
नयनों के अश्रु को भिगाते पल में
मन के घावों के गर्भ से
शब्द झरते हैं
टूटे हुये हृदय के बूंदों की वर्षा में
जीवन गाथाएँ होती हैं अंकुरित
उनकी सुगंध ही साहित्य बनती है
उस अक्षर ने फिर पूछा
तुम में इतनी चुप्पी क्यों?
मैंने धीमे से कहा
जहां शब्द नहीं पहुँच पाते
वहाँ निश्शब्द सी चुप्पी ही
अत्यंत गहन कविता होगी
हर बार मन का टूटता हर पल
एक नए अक्षर का रूप लेता है
जीवन के तराशे गए घाव ही
साहित्य के शाश्वत शिल्प बनते हैं
अंत में वह अक्षर मुझ में ही
पिघलकर समा गया
क्योंकि मैं ही वह अक्षर हूँ
किसी ने जो पूरा न पढ़ा हो
ऐसी सजीव कविता हूँ।

डॉ टी महादेव राव
विशाखापटनम
आंध्र प्रदेश

सपनों के टूटने की आवाज़

वे काँच की तरह नहीं चटखते,
वे शांत मन के किसी कोने में
एक सूखी पत्ती की तरह चरमराते।
कोई हवा उन्हें छूती सपनों का टूटना
दरअसल एक आदमी का
थोड़ा-थोड़ा कमतर होना है ।
उसकी मुस्कान में अनकहा विराम
आँखों में दूर तक फैली उदासी।
कभी ध्यान से देखना,
जो सबसे अधिक हँसी के पीछे
कई अधूरे सपनों की राख
धीरे-धीरे उड़ती बहती ।
सपने जब बिखरते
तो कोई आवाज नहीं
सिर्फ़ उम्मीद की चिड़िया
घोंसले पर देर लौटती।
फिर भी मन एक छोटा-सा कोना
बचाकर रखता कि शायद वर्षा ऋतु में
बारिश आएगी, धरती फिर भीगेगी,
कोई नया सपना
खिलने वाले फूल की तरह
धीरे से कोपलें खोलेगा।
शायद इसी उम्मीद
का नाम सपना है
जहाँ टूटने की आवाज़ से
अधिक फिर से बिखरने की
गूंज सुनाई देती ।

संजीव ठाकुर, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009415 415,

क्रिया प्रति क्रिया अभिव्यक्ति

सभी क्रियाएं कर्म के प्रति रुप ।
प्रति क्रिया स्वरुप, परीणाम मीले हैं।
सुनसान गुफा में, ध्वनि की प्रतिध्वनि।
जैसे राम पुकारने से,राम ध्वनि सुनाई देगी।।1।।
ठीक इसी प्रकार कर्मो के ।
क्रिया करने के परीणाम। मानव समुदाय को मीलते हैं।
इसे गीता में भगवान कहे हैं।।2।।
अर्जुन तुम्हारा कर्म करने पर अधिकार हो।
उसके फल परीणाम पर अधिकार ना हो।
कारण कर्म संस्कार के बीज के परीणाम फल समय पुर्ण होने पर उसी के अनुसार होंगे।।3।।
जैसे गेहूं के अन्न के दाने पर, बीज रुप से।
भुमि में बोने पर,समयोपरांत पकने पर।
गेहूं अन्न के दाने के रूप में गेहूं बीज ही भी लेंगे।
यह क्षेत्र (खेत) और बीज रोपण से समझाये हैं।।4।।
ठीक इसी प्रकार, क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ? रुप से मानव समुदाय को,
भगवान अर्जुन को सदुपदेश देकर समझाये हैं।
मुख्य आशय यही है कि कर्म करो, निष्काम कर्म करो।
और प्रभु कृष्ण भगवान को ,
सभी कर्मफल समर्पित होता रहे आजीवन।
यही सुंदर कर्मफल निरुपम है,
मेरे निजी मानसिक स्तर अनुसार।।5।।

करमचंद कौशिक खंडवा
, मोबाइल नंबर
9754051951

संतोष और सफलता

संतोष और सफलता की जंग पुरानी
दोनों एक-दूसरे की है सानी
कहते हैं सफलता मिले तो संतोष होगा,
वरना मन में द्वंद ही द्वंद होगा।
पर संतोष गर पहले आ जाए,
तो कदम बढ़ने से पहले ठहर जाए।
फिर आविष्कार कौन करेगा?
उड़ान कौन भरेगा?
अर्जुन भी द्वंद में था एक बार,
हथियार डालना चाहा था उसने उस बार।
'राज्य नहीं चाहिए' कहकर रुका,
ये संतोष नहीं था, बस डर से झुका।
कृष्ण ने कहा - पहले द्वंद मिटाओ,
फिर सच्चे संतोष को अपनाओ।
बाहरी संतोष छलावा है,
अंदर का संतोष ही सच्चा सहारा है
आधी रोटी खाकर संतोष करोगे
तो पूरी कैसे प्राप्त करोगे
इसलिए पहले सफलता की राह चलो,
मंजिल पाकर फिर संतोष में ढलो।
सफलता के बाद का संतोष,
वही जीवन का पूर्ण संतोष।

दीपा शर्मा उजाला फरीदाबाद

बदलते जमाने का फसाना

मौत से नहीं,अब जिन्दगी से डर लगता है
बड़ा मुश्किल आजकल गुजर- बसर लगता है
प्लास्टिक के चिथड़ों से पट गया शहर
कितना भयावह और बदसूरत लगता है
दुश्मनी है तो चलेगा कोई बात नहीं
अब यारी- दोस्ती से डर लगता है
हवा, पानी, भोजन सब में घुल गया जहर
आदमी आखिर कितना सबर रखता है
चन्द हाथों में सिमटती जा रही है दौलत
ये संसार अब भिखारियों का ग्रह लगता है
कौन पढ़ता है अब ' दुष्यन्त ' लिखे किसके लिए
क्या सबको अब सच पढ़ने से डर लगता है।

कुमार दुष्यन्त राम टेकरी, मन्दसौर

खिड़कियां दिलों की

बहुत चुप रहे हम, चलो आज बोलते हैं।
खिड़कियां दिलों की, चलो आज खोलते हैं।
खा रहे अकेले ही ग़मों की बिरयानी,
वजन बढ़ गया है, चलो आज तोलते हैं।
सिलसिले जो रुक गए थे मुलाक़ातों के,
रहे बेचैन क्यों हम, चलो अब टटोलते हैं।
तनहा बदरंग हुई वादियों की सुर्खियां,
आओ फिजाओं में, रंग वही घोलते हैं।
उकता गई तमाम आफ़तों से 'कुसुम',
करने आवारगी, चलो कहीं डोलते हैं।

कुसुम अग्रवाल
कांकरोली (राजसमंद)-
313324
9461179465

प्रकृति के वीर (सच्चे साथी)

प्रकृति के वीरों को यूं तो मिटाना पाप है।
पेड़ों को पौधों में बदलना। यह तो एक अभिशाप है।
जंगल भी तो हरे भरे थे। किसने साफ किया इनको।
जब यह जंगल मिटा रहे थे क्यों नहीं रोक इनको?
एक पिता की अभिलाषा को कोई समझ नहीं पता।
गांव का बरगद हरा भरा है हर राही आनंद पता।
यहां नीम के वृक्षों को माता का दर्जा मिलता है।
गांव की देवी माता पूजन का सुख भी तो मिलता है।
प्रकृति के वीरों को कमजोर कभी ना मानना।
हर रोगों की दवा छुपी है नीम हकीम से जानना।
खुद को मिटा के आपको आराम दे रहे हैं।
जीवन के हर कदम पर यह साथ दे रहे हैं।
उनकी सांसों से तो मानव की सांसे चलती है।
नहीं मिलेगा ऑक्सीजन तो पहले फिजा भी करती है।
विकास तो विकास है करना तुम्हारा काम है।
बहुत बड़ा है शहर मेरा फिर गालियां क्यों जाम है?
आगे बढ़ो और रह निकालो बहुत बड़ा मैदान है।
सोन चिरैया और ममता में मेरा हिंदुस्तान है।
प्रकृति के वीरों को यूं तो मिटाना पाप है।
पेड़ों को पौधों में बदलना यह तो एक अभिशाप है।
राधे राधे।

संजय शर्मा इंदौरी।

नारी तुम !!

नारी तुम !
युगों-युगों से
शक्ति ,भक्ति और
देवी ! आराध्या ;
तुम गीता , गायत्री
गंगा ,यमुना और
सरस्वती ;
तुम !
लक्ष्मी और चन्डी ,
धन-दाता ,बुद्धि-प्रदाता ,
शक्ति-पुंज तुम !
मनुज लोक की ,
हो आराध्या ;
तुम !जननी ,
सृष्टि-सृजक
इस समाज की ;
तुम ! माँ !
ममता की मूरत ,
धरती पर ,
भगवान की सूरत ;
प्रथम गुरु तू ,
परिवार की ,
तुझ से
सीखें सब ,
बातें ज्ञान की ;
दया , धर्म और
धैर्य शील गुण
तेरे हृदय समाए ;
दुनियाँ के सारे सुख
गोदी में तेरी पाएँ
जब-जब चाहे
तृप्ति आनन्द की
आँचल में तेरी पाएं ;
तेरे ऋण से ,
न उऋण हुए कोई
योगी और सन्यासी ,
तेरी महिमा तो
देवों ने भी ना जानी
तू माँ , बेटी और
बुआ भाभी ;
बहिना, जीवन साथी,
दादी नानी से सीखी
हमनेकई कहानी ;
शब्द एक है--नारी !
पर तेरे रूप अनेक ,
तू ! थाती देश की ,
तू गौरव अभिमान
तेरा अभिनंदन वंदन है
हम सब करे प्रणाम् !!!

प्रफुल्ल त्रिवेदी

युवकों में अतुलित बल सेवा

शक्ति परोपकार ज्ञान समर।पण
अभिव्यक्ति प्रगति रथ चले
ना रुके निरन्तर ही
देवसंस्कृति कर्तव्य युग सुरभित ,
भारत हिन्दू सनातन दिव्यज्ञा
3सर्वोदय जन जन कल्याण सुखद
सदैव षफैला रहे मधु मत्त बसंत
प्रताब शिवाजी रामशिवभव्य नाम
हिन्दू सनातन भारतगरिमामय दैश
4, सुरा सुन्दरी गूज आकाश रास
संत्य अहिंसा मानवता विशेष
चाह नारी सुरक्षित रक्षा विशेष
छंद्म चुगली लोभ द्वेष सर्व नाश
5चाह नारी रक्षा सादर समर्पण
चाह बजरंग बली अकूश रक्षा
सिन्धु पीनग तोड हाथी पछाड़ें
शर्त्अन के देश दिशा उजाडे
हिन्दू सनातन भारत समर्थन की।।

महाकवि गंभीरा नागदा निर्देशक
निराला हिन्दी सा अकादमी अंश भारत
चरित मानस महाकाव्य

तसव्वुर-ए-शब

इश्क़ हँसाता है, हाँ इश्क़ रुलाता है,
दर्द जुदाई का, यह ज़हर पिलाता है।
चाहते हैं तुमको, हम आज भी ओ जानाँ,
कौन भला अपना, वो प्यार भुलाता है।
वो हसीं सा चेहरा, अब पास नहीं मेरे,
मुझको तसव्वुर ख़ाब-ए-शब में सताता है।
राज़-ए-सनम की बातें, महज़ रहीं बातें,
उजड़ा हुआ गुलशन, फिर कौन सजाता है!
प्रेम की यादें दिल में चुपके से कहती हैं,
प्यार दिखा कर वो ताउम्र निभाता है।
राह 'नवीं',जो देखे शाम सजाने को
शख़्स वही अब खंजर हाथ दिखाता है

-प्रेमयाद कुमार
नवीन (नवीं)
जिला - महासमुन्द
(छ:ग)

पेपर कपड़ा बैग अपनाना हैं

पेपर, कपड़ा बैग का उपयोग बढ़ाना है,
जन जन को प्लास्टिक बैग से मुक्त कराना है,
पेपर , कपड़ा बैग अपनाना हैं।
प्लास्टिक बैग का बढ़ता चलन,
पर्यावरण को दूषित कर रहा हैं,
पेपर ,कपड़ा बैग को अपनाकर,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाना हैं,
जन जन को पेपर ,कपड़ा बैग का महत्त्व,
समझाना हैं,
पेपर, कपड़ा बैग अपनाना हैं।
सस्ता कीमत प्लास्टिक बैग को,
आगे बढ़ाता है,
पर यही सस्ता प्लास्टिक बैग,
अपने साथ बीमारी भी लाता है,
हमे स्वयं को और
हर प्राणी को बचाना है,
पेपर कपड़ा बैग अपनाना हैं।
'नयन' हमारे अब जहा भी नजर डाले,
पेपर कपड़ा बैग हर जगह, हर हाथ में,
पा ले,
अब तो प्लास्टिक बैग से,
'भारत 'को मुक्त कराना है,
पेपर कपड़ा बैग का,
जय गान गाना हैं,
पेपर,कपड़ा बैग अपनाना हैं।

नयन राठी
इंदौर
मो. 7000236118

पावस कविता

भिजवाई बारिश ने
हवा के पंखों पर
यह खबर कि आ रही हूं
मज़े के लिए खिड़की खोली
कविता लिखने कागज़ निकाली
अक्षरों से पहले आ गिरीं
बारिश की बूंदें
कागज़ साथ मैं भी भींग गया
सारे आनंद को
अनुभूति का रूप देकर
मैंने मन में लिखी
पावस कविता।
छोटे से छाते में
स्कूल के दो नन्हे बच्चे
बारिश में आधे सूखे आधे भींगे
तेजी से बढ़ते चले आ रहे हैं
बारिश उनसे तेज चाल में
उनके घर पहुंच गई है
बाहर आंचल सिर पर डाले मां
बच्चों की राह देख रही है
बारिश इधर उधर नाचती
मां और बच्चों की जोड़ रही है
बीच बीच में चमकती बिजली
आधे अंधेरे को तोड़ रही है

डॉ टी महादेव राव
विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)

समसामयिक क्षणिका

मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे ...
पंक्ति का अर्थ कुछ लोगों ने
कुछ इस तरह निकाला....?
मंदिर के दानपात्र की रकम से
टूटी झोपड़ी की जगह अपना
आलीशान महल बना डाला....!!
चढ़ावें की राशी
शौचालय में छुपाई गई,
रामजी के सेवकों को
यह कृत्य करते हुए भी
कुछ लाज-शर्म ना आई...?

-संजय डागा हातोद

ट्रंप अकड़ इरान का जिद

अमेरिका इरान भिड़ गए फिर
वैश्विक संकट बढ़ने के आसार,
जहाज आवागमन हुआ बाधित
चिंतित प्रभावित सारा संसार।

ट्रंप अकड़ इरान का जिद
जद में आए कई और देश,
बरस रहे बम रात-दिन वहाँ
मानवता आहत उठाती क्लेश।

हम जंग में सीधे नहीं शामिल
अर्थव्यवस्था हो रही प्रभावित,
तेल आयात बाधा भारी संकट
दोनों देशों से जुड़ा हमारा हित।

विश्वयुद्ध की भावी आहट
भूतल पर खतरा मंडरा रहा,
रणनीतिक साझेदारी सूझबूझ
क्या होगा भविष्य गहरा रहा।

होर्मुज पर न हो
किसी का
नियंत्रण
असंख्य देशों
की की यही
चाहना,
निर्बाध हो जाय त्वांरत आवागमन
सुलझ जाय बात यही शुभकामना।

--डॉ. यमुना तिवारी व्यथित

नामों का सफर

उम्र के संग बदलते रहे, नाम और किरदार,
माता-पिता, भाई-बहन, कभी मित्र या रिश्तेदार।

बचपन में बुलाते थे राजू, बबलू, बंटी या नोनी,
बेटियों को प्यार से कहते– बबली, रानी, सोनी।

किशोरवय में गली, मोहल्ला, शहर हो या ग्राम,
घर और दोस्तों की जुबाँ पर रहता प्यार का नाम।

युवाकाल आया, कॉलेज हो या कमाई का धाम,
तब दुनिया ने पुकारा हमें, लेकर हमारा उपनाम।

विवाह होते ही, एक-दूजे में खो गये नाम-उपनाम,
इस गठबंधन ने दिया, नए ÷परिवार÷ का नाम।
माता-पिता बने तो बच्चे रखते ÷मम्मी-पापा÷ नाम,
दिनभर चुलबुली मस्ती में, हो जाती सुबह शाम।
नाती-पोते होते ही मिला, बच्चों संग न्यारा काम,
पता ही नहीं चला, कब हो गई जिन्दगी की शाम।
यूँही बहती जीवन-नदी, लगा नहीं कभी जाम,
क्यूंकि सदैव माला जपते रहे राम-सियाराम।

ऐसे ही बही जिन्दगी की नदी, दे गई कई नाम,
कल-कल करते पहुंची, गंगासागर धाम।

-योगेश रघुवंशी, इन्दौर

श्री गिरिराज धरन की जय

पूनम शुभ कल्यान प्रद, लख-लख आबत भीर।
परिकम्मा पातक हरत,भक्तन की भव पीर।।
मन उमगाबत मानसी,भक्तन मंज्जन पान।
दया धरम धरि धारना,यथा सक्ति सुभ दान।।
भंडारे पग-पग लगें,भूख लगै जब खाय।
भरि-भरि दोंना खीचरी,भाजी पूरी चाय।।
रोटी भरि गाड़ी चली,दानबीर सरसाय।।
भरे पेट आसीस दें,बिल्ली बंदर गाय।।
दीन-हीन कपि संत हित, सेबा करत सुजान।
परिकम्मा फल दायिनी,आत्म तत्व कौ ग्यान।।
स्वर्न सिला गिरिराज प्रभु,संतन कूँ दरसाय।
जो आबै जा भाव ते,खाली हाथ न जाय।।
परिकम्मा तन दूभरे,हुलसत हिय हरसाँय।
भक्ति भाव भीजत चलें,जय-जय,जापत जाँय।।
ध्यान मगन मग पग धरत,मौन मानसिक जाप।
गिरधारी काटत सहज,भव बंधन संताप।।

देवी प्रसाद गौड़

हमारे बुजुर्ग

वे झुर्रियां जो चेहरे पर उभर आई है,
समय की चोट नहीं, अनुभव की मोहर है।
कांपते हाथों में जो थरथराहट है,
उसमें सदियों की तपस्या का स्पर्श है।
वे जिनकी आंखों में आज धुंधलापन है,
कभी उन्हीं आंखों ने हमारे सपनों को देखा था।
जिनके शब्द आज धीमे पड़ गए हैं ,
कभी उन्हीं शब्दों से जीवन को दिशा मिली थी।
बुजुर्ग बोझ नहीं -- वे तो घर की नींव है,
इतिहास की सांस है, उनकी चुप्पी में उपेक्षा नहीं,
बस अपनों से एक अपनापन खोजती आंस है।
हमारे ......
उनके झुके हुए कंधों पर केवल उम्र का भार नहीं,
हमारे सपनों का बोझ भी रखा है।
उनकी सांसों में बीते हुए दोनों की तपिश है,
और आने वाली पीढ़ियों के लिए अनकही प्रार्थनाएं हैं।
उनकी हर डांट में अनुभव का प्रेम छिपा है,
हर चुप्पी में टूटते रिश्तों की पीड़ा है।
वे शिकायत नहीं करते, बस धीरे-धीरे
अपने भीतर सिमटते जाते हैं --
पुरानी किसी किताब की तरह।
हमारे ....
आओ सहारा दो इन्हें अपनी बाहों , कंधों का
देखना सहारे की लाठी हाथों से छूट जाएगी।
सुन लो, समझ लो उनके अनमोल अनुभवों को
बाद में नेट - गूगल पर भी नहीं मिल पाएंगे।
आओ उनके पास बैठे, बातें करे, इनकी थकी
आंखों में अपनी कृतज्ञता उतार दे क्योंकि -
जिस घर में बुजुर्ग मुस्कुराते हैं, वहां ईश्वर स्वयं
चुपचाप निवास करते हैं।
बुजुर्गों को अपने से अलग मत करो,
उनकी सेवा करो - सहायता करो,
देखना एक दिन वृद्धाश्रम बंद हो जाएंगे।
वे झुर्रियां जो चेहरे पर उभर आई है,
समय की चोट नहीं, अनुभव की मोहर है।

प्रकाश चंद दुबे
ई- सेक्टर, सुदामा नगर, इंदौर (म . प्र गई)

युद्ध की विभीषिका

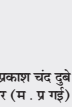

कल जहां फूलों की खुशबू से गुलजार थे चमन,
आज वहीं से आ रही है सड़े मांस की दुर्गंध
जंग में तोप से गोलों की बरसाते,
मकान टूटे और ध्वस्त हो गई इमारतें,
कल जहां बस्ती थी इंसानियत की,
मलबों के पहाड़ों में अब तब्दील हो गए हैं।
फिजाओं में फैल गई जहरीली बारूद की गंध
यह कैसा जहां बना डाला है,
इंसान ने अपने हवस की खातिर।
धूल के गब्बर उड़ रहे हैं फिजाओं में,
मकान जल रहे हैं ,और बस्तियां वीरान है।
हर तरफ धुआं धुआं,जमीन खून से लाल है ,
हर सड़क, हर गली पटी हुई है लाश से,
मारे गए इंसान क्या परिंदे क्या मवेशी
मर गई इंसानियत इस युद्ध के नाम से,
गिद्ध हर मकान की छत पर विराजमान है
जो मर गए उन्हें तो मोक्ष मिल गया,
जो बच गए, जीवन उनका नरक के समान है।
न घर में सामान है,न खेत ना खलिहान है,
अर्थ तंत्र बिखर गया, जनतंत्र सिहर गया।
गणतंत्र का तमाम तंत्र ही बिगड़ गया
व्यापार ठप हो गया, आयात निर्यात बंद हो गया।
गली गली का प्यार, नफरतों में बदल गया।
नहीं चाहिए ऐसी सभ्यता, जो हैवानियत को जन्म दे, नहीं चाहिए विज्ञान वो, जो इंसानियत को भुला दे।

श्रीमती सीमा (ढोबले) ढोक, गुजराती स्कूल इंदौर

आसाड़ी के बादल,कुछ तरस खाओं

उमड़ घुमड़ छाए कजरारेआसाड़ी बादल,
आस जगाए बरसेंगे, घनघोर छाए बादल,
चढ़ते सूरज संग चले जाएं, छाए जो बादल,
हताश निराश घबराए मन, सूख रही फसल,
टकटकी लगा देखें किसान, बरसों घनश्याम,
मुरझाए कुम्हलाए नव कोपल, किसान उदास,
दम तोड़ रही फसल,बरसों बुझाओ तुम प्यास,

नवयौवना सी झलक दिखा, मन मत ललचाओं,
सलील बूंदों की झड़ी लगा,धरा प्यास बुझाओं,
झमाझम बरसो,सूखीती फसलकी,प्यासबुझाओ,
वसुंधरा को हरीभरी कर,फसल भी लहलहाओ,
किसान के सूख रहे प्राण,पानी बाबा तरस खाओं,
आसाड़ी के कजरारे बादल,अमृत सा जल बरसाओं।

नंदकिशोर उपाध्याय प्रबोधक,
सरस्वतीनगर, धार (म. प्र.)